Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat
دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت
Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **04.05.2018** मस्जिद बैतुल फ़तूह, लंदन।

सय्यदुश्शुहदा, शेर-ए-ख़ुदा और शेर-ए-रसूल हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ीयल्लाहु अन्हु के गुणों का रूचि पूर्ण तथा ईमान वर्धक वर्णन

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक अवसर पर फ़रमाया कि हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आगमन के समय अरब की क़ौम की सभ्यता तथा चरित्र और रूहानियत का क्या हाल था। घर घर में युद्ध तथा मदिरा सेवन और व्यभिचार और लूट मार, अर्थात प्रत्येक बुराई विद्यमान थी। कोई सम्बंध एवं जोड़ ख़ुदा तआला के साथ तथा सुन्दर आचरण के साथ किसी को प्राप्त नहीं था। हर एक फ़िरऔन बना फिरता था किन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम के आने से जब वे इस्लाम में दाख़िल हुए तौ ऐसी अल्लाह की मुहब्बत और एकता उनमें पैदा हो गई कि उनमें से हर एक ख़ुदा के लिए मरने का तय्यार हो गया, उन्होंने बैअत के यथार्थ को प्रकट कर दिया तथा अपने अमल से इसका नमूना दिखा दिया। आप अलै. फ़रमाते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा ने इतना अधिक आज्ञा पालन का नमूना दिखाया जिसका उदारहरण न पहले था न आगे दिखाई देता है। आप अलै. फ़रमाते हैं- लेकिन ख़ुदा चाहे तो फिर भी वैसा ही कर सकता है। इन उदाहरणों में दूसरों के लिए लाभ है। आप अलै. अपनी जमाअत के बारे में फ़रमाते हैं कि ख़ुदा तआला ऐसे नमूने पैदा कर सकता है। आप अलै. फ़रमाते हैं कि ख़ुदा तआला ने सहाबा की प्रशंसा में क्या ख़ूब फ़रमाया है- مِنَ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ رِجَالٌ صَدَقُوۡا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيۡهِ ۚ فَمِنۡهُمۡ مَّنۡ قَضٰى نَحۡبَهٗ وَمِنۡهُمۡ مَّنۡ يَّنۡتَظِرُ अर्थात- मोमिनों में से ऐसे पुरुष हैं जिन्होंने इस वादे को सच्चा कर दिखाया जो उन्होंने ख़ुदा तआला के साथ किया था। सो उनमें से कुछ अपना जीवन बलिदान कर चुके हैं तथा कुछ अपनी जान देने को तय्यार बैठे हैं। फ़रमाते हैं कि सहाबा की प्रशंसा में क़ुर्आन शरीफ़ से आयतें एकत्र की जाएँ तो उससे बढ़कर कोई सुन्दर आचरण नहीं, अतः नेकियों के तथा बलिदानों के ये उदाहरण हमारे लिए सुन्दर आचरण के उदाहरण हैं। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- मैं सहाबा के हालात बयान करता हूँ जिनमें बद्री सहाबा भी थे तथा कुछ अन्य सहाबा भी किन्तु मुझे विचार आया कि पहले केवल बदर के युद्ध में शामिल होने वाले सहाबा का वर्णन करूँ, उनके विशेष स्तर हैं, ये वे लोग हैं जिनपर अल्लाह तआला प्रसन्न हुआ और ये लोग अल्लाह तआला की विशेष प्रसन्नता प्राप्त करने वाले लोग हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- आज हज़रत हमज़ा बिन मुत्तलिब का वर्णन करुंगा। ये सय्यदुश्शुहदा की उपाधि से विख्यात हैं तथा इसी प्रकार असदुल्लाह और असद रसूल की उपाधि भी है इनकी। हज़रत हमज़ा क़ुरैश के सरदार हज़रत मुत्तलिब के बेटे तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा थे। हज़रत हमज़ा की वालिदा का नाम हाला था तथा यह भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वालिदा हज़रत आमना की चचाज़ाद बहिन थीं। हज़रत हमज़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दो वर्ष तथा एक बयान के अनुसार आयु में चार वर्ष बड़े थे। हज़रत हमज़ा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम के रज़ाई भाई भी थे। एक सेविका थी शुऐबा, उन्होंने दोनों को दूध पिलाया था। हज़रत हमज़ा ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम के नबुव्वत के दावे के बाद सन 6 नबवी में दार-ए-अरक़िम के

ज़माने में इस्लाम क़बूल करने का सौभाग्य प्राप्त किया। हज़रत हमज़ा के इस्लाम क़बूल करने की घटना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने इतिहास के माध्यम से अपने अन्दाज़ में बयान की है, उसका कुछ सारांश मैं बयान करुंगा। एक दिन आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम सफ़ा और मर्वा नामक पहाड़ियों के बीच एक पत्थर पर बैठे थे और निःसन्देह यही सोच रहे थे कि ख़ुदा तआला की तौहीद को किस प्रकार स्थापित किया जाए कि इतने में अबू जहल आ गया। उसने आपको बड़ी गालियाँ देनी आरम्भ कीं। आप चुपचाप उसकी गालियों को सुनते रहे और सहन करते रहे, एक शब्द भी आपने मुंह से न निकाला। अबू जहल जब जी भर कर गालियाँ दे चुका तो इसके पश्चात वह दुष्ट आगे बढ़ा तथा उसने आपके मुंह पर थप्पड़ मारा किन्तु आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फिर भी उसे कुछ नहीं कहा। सामने ही हज़रत हमज़ा का घर था। उनका नियम था कि रोज़ाना सुबह सवेरे तीर कमान लेकर शिकार पर चले जाया करते थे और शाम को वापस आते थे। जब अबू जहल यह सब कुछ कर रहा था तो हज़रत हमज़ा की एक सेविका द्वार पर खड़ी यह दृश्य देख रही थी परन्तु कुछ कर नहीं सकती थी, देखती रही सुनती रही और भीतर ही भीतर व्याकुल होती रही। शाम को हज़रत हमज़ा जब शिकार से वापस आए तो सेविका ने कहा तुम्हें लाज नहीं आती, बड़े बहादुर बने फिरते हो। हमज़ा ने आश्चर्य से पूछा कि क्या मामला है? सेविका ने कहा कि बात क्या है, तुम्हारा भतीजा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यहाँ बैठा था कि अबू जहल आया और उसने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर हमला कर दिया तथा अत्यधिक गालियाँ देनी शुरु कर दीं और फिर उनके मुंह पर थप्पड़ मारा किन्तु मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आगे से उफ़ तक नहीं की और चुपचाप सुनते रहे। हमज़ा ने अपनी सेविका से जब यह घटना सुनी तो उनकी आँखों में ख़ून उतर आया तथा उनका वंश अभिमान जोश में आया, उसी समय बिना आराम किए क्रोध की अवस्था में कअबे की ओर गए। पहले उन्होंने कअबे की परिक्रमा की तथा उसके पश्चात मजलिस की ओर बढ़े जिसमें अबू जहल बैठा हुआ अनाप शनाप बक रहा था तथा इस घटना को आनन्द ले लेकर सुना रहा था तथा घमंड के साथ यह बयान कर रहा था कि आज मैंने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यूँ गालियाँ दीं और यह व्यवहार किया। हमज़ा जब उस मजलिस में पहुंचे तो उन्होंने जाते ही अपनी कमान बड़े ज़ोर से अबू जहल के सिर पर मारी और कहा कि तुम अपनी बहादुरी के दावे कर रहे हो तथा लोगों को सुना रहे हो कि मैंने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस प्रकार अपमानित किया। अब मैं तेरा अपमान करता हूँ यदि तुझमें कुछ साहस है तो मेरे सामने बोल। अबू जहल उस समय मक्का में एक शूर वीर राजा का स्तर रखता था, सरदार था क़ौम का। जब उसके साथियों ने यह घटना देखी तो जोश के साथ उठे और उन्होंने हमज़ा पर आक्रमण करना चाहा। परन्तु अबू जहल जो रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शांति के साथ गालियाँ सहन करने के कारण और फिर अब हमज़ा की वीरता तथा साहस के कारण सहम गया था, बीच में आ गया तथा उन लोगों को आक्रमण करने से रोका और कहा तुम लोग जाने दो, वास्तव में बात यह है कि मुझसे ही ग़लती हुई थी और हमज़ा की बात ठीक है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद ने अपनी शैली में लिखा है कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिस समय सफ़ा और मर्वा की पहाड़ियों से वापस घर आए थे तो अपने दिल में यह कह रहे थे कि मेरा काम लड़ना नहीं है बल्कि धैर्य के साथ गालियाँ सहन करना है परन्तु ख़ुदा तआला अपने सिंहासन पर बैठा यह कह रहा था कि ऐ मुहम्मद, सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, तू लड़ने के लिए तय्यार नहीं किन्तु क्या हम उपास्थित नहीं हैं कि तेरी जगह तेरे शत्रुओं से मुक़ाबला करें। अतः ख़ुदा तआला ने उसी दिन अबू जहल का मुक़ाबला करने वाला एक निष्ठावान आपको दे दिया तथा हज़रत हमज़ा ने उसी मजलिस में जिसमें कि उन्होंने अबू जहल के सिर पर कमान मारी थी अपने ईमान की घोषणा कर दी और अबू जहल को सम्बोधित करते हुए कहा कि तू ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गालियाँ दी हैं केवल इस कारण से कि वह कहता है कि मैं ख़ुदा का रसूल हूँ और फ़रिश्ते मुझ पर उतरते हैं, कान खोल कर सुन लो कि मैं आज से मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दीन पर क़ायम हूँ और मैं भी वही कुछ कहता हूँ जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहते हैं, यदि तुझ में साहस है तो आ मेरे मुक़ाबले पर। यह कहकर हमज़ा मुसलमान हो गए। रिवायतों में है कि हज़र हमज़ा के मुसलमान होने के बाद मक्का के जो मुसलमान थे उनके ईमान में बड़ी व्यापकता आई। हज़रत हमज़ा ने भी अन्य मुसलमानों के साथ मदीने की ओर हिजरत फ़रमाई।

मदीना हिजरत के पश्चात भी काफ़िरों के षड्यन्त्र समाप्त नहीं हुए इस कारण से मुसलमानों को बड़ा सावधान रहना पड़ता था तथा काफ़िरों की गतिविधियों पर नज़र रखनी पड़ती थी। रिवायत में है कि क़ुरैश की गतिविधियों तथा षड्यंत्रों से अवगत रहने के लिए नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अभियानों की आवश्यकता पड़ी जिनमें हज़रत हमज़ा को अत्यधिक सेवा का अवसर प्राप्त हुआ। रबीउल अव्वल दो हिजरी को नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत हमज़ा के नेतृत्व में तीस ऊँटों पर सवार मुहाजिरों की एक टुकड़ी एक क्षेत्र की ओर भिजवाई। हमज़ा उनके साथ शीघ्रता के साथ वहाँ पहुंचे तो क्या देखते हैं कि मक्का का महान रईस अबू जहल तीन सौ सवारों की सेना लिए उनके स्वागत के लिए तय्यार था। मुसलमानों की संख्या से यह संख्या दस गुना अधिक थी, दोनों टुकड़ियाँ आमने सामने हो गईं, पंक्तियाँ बना ली गईं, युद्ध आरम्भ होने वाला था कि उस क्षेत्र के रईस मजदी बिन उमरु अलजुहनी ने जो दोनों पक्षों के साथ सम्बंध रखता था, बीच में आकर संधि करा दी और लड़ाई होते होते रुक गई।

मदीना की ओर हिजरत के बाद अन्य मुसलमानों की भांति हज़रत हमज़ा की आर्थिक दशा भी बड़ी दयनीय हो गई। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमरु बयान करते हैं कि एक दिन उन्हीं दिनों में हज़रत हमज़ा, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए तथा निवेदन किया कि कोई सेवा का दायित्व मुझे भी दे दें ताकि व्यवसाय का कोई अवसर पैदा कर लूँ तो रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- ऐ हमज़ा, अपना स्वाभिमान जीवित रखना अधिक पसन्द है अथवा उसे मार देना? हज़रत हमज़ा ने कहा, मैं तो उसे जीवित रखना ही पसन्द करता हूँ। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- फिर अपने स्वाभिमान की सुरक्षा करो। फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपको दुआओं पर ज़ोर देने की प्रेरणा दी तथा कुछ विशेष दुआएँ सिखाईं। अतः हज़रत हमज़ा कहते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने फ़रमाया था कि इस दुआ को अनिवार्य रूप से पकड़ो कि اللهم انی اسئلك باسمك الا عظم ورضوانك الاكبر अर्थात- ऐ अल्लाह, मैं तुझसे तेरे महान नाम तथा महानतम कृपा के माध्यम से सवाल करता हूँ, और फिर आपने सदैव इस दुआ के फल खाए।

सन दो हिजरी में बद्र की विख्यात घटना हुई। बद्र के युद्ध के अवसर पर काफ़िरों की ओर से असवद बिन अब्दुल असद मख़ज़ूमी निकल कर सामने आया, यह बड़ा ही दुष्ट तथा बुरा व्यक्ति था। उसने प्रतिज्ञा की थी कि मैं अवश्य ही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पानी की हौज़ में से जाकर पानी पियूँगा अथवा उसे ढा दूँगा अथवा उसे नष्ट कर दूँगा या उसके पास मर जाऊँगा, वह इस निश्चय के साथ निकला। हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब उसका मुक़ाबला करने आए। जब इन दोनों का आमना सामना हुआ तो हज़रत हमज़ा ने तलवार का वार करके उसकी आधी पिंडली काट दी, वह हौज़ के पास था, कमर के बल गिरा तथा अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए हौज़ की ओर बढ़ा ताकि अपनी क़सम पूरी करे। हज़रत हमज़ा ने उसका पीछा किया तथा एक और प्रहार करके उसका विनाश कर दिया।

हज़रत अली रज़ी. बद्र के युद्ध के विषय में बयान करते हैं कि उसमें काफ़िरों की संख्या मुसलमानों की अपेक्षा अत्यधिक थी। रात भर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुदा के समक्ष विनय पूर्ण दुआओं में व्यस्त रहे। हज़रत अली बयान करते हैं कि उतबा बिन रबीअः और उसके पीछे उसका बेटा तथा भाई भी सामने आए तथा पुकार कर कहा कि कौन हमारे मुक़ाबले के लिए आता है तथा उतबा ने कहा कि हम तो केवल अपने चचा के बेटों से युद्ध करने का इरादा रखते हैं, तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- ऐ हमज़ा, ऐ अली, ऐ उबैदा बिन हारिस आगे बढ़ो। हमज़ा, उतबा की ओर बढ़े। हज़रत अली कहते हैं कि मैं शीबा की ओर बढ़ा तथा उबैदा और वलीद के बीच झड़प हुई। हज़रत अली और हज़रत हमज़ा ने अपने अपने विरोधियों का मार गिराया था। हज़रत हमज़ा की वीरता का यह हाल था कि बद्र के युद्ध में काफ़िरों में भय डालने के लिए आप शुतुर मुर्ग़ का पंख युद्ध के निशान के रूप में लगाए हुए थे। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ बयान करते हैं कि उमय्या बिन ख़लफ़ क़ुरैश के सरदारों में से था जो कि मक्का में हज़रत बिलाल को यातनाएँ देता था, बद्र के युद्ध में अन्सार के हाथों से मारा गया, उसने मुझसे पूछा यह कौन व्यक्ति है जिसकी छाती पर शुतर मुर्ग़ का पंख लगा हुआ है। मैंने कहा यह हमज़ा बिन मुत्तलिब हैं। उमय्या कहने लगा कि यह वही व्यक्ति है जिसने आज हमें सबसे बढ़कर हानि पहुंचाई है। अंग्रेज़ इतिहासकार सर विलयम मयूर बद्र के युद्ध के विषय में हज़रत हमज़ा के योगदान के बारे में लिखता है कि हमज़ा लहराते हुए शुतर मुर्ग़ के पंख के साथ हर स्थान पर स्पष्ट रूप से दिखाई देते थे।

और भी कई अन्य सरदारों को आपने ने युद्ध में ढेर किया। ओहद की लड़ाई में भी हज़रत हमज़ा ने वीरता के जौहर दिखलाए। आपकी यह शूर वीरता मक्का के क़ुरैश की आँखों में बड़ी खटकी थी। बुख़ारी में इसका विवरण इस प्रकार बयान हुआ है कि उमैर बिन इसहाक़ बयान करते हैं कि ओहद के युद्ध वाले दिन हमज़ा बिन मुत्तलिब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आगे दो तलवारों के साथ युद्ध कर रहे थे और कह रहे थे कि मैं असदुल्लाह हूँ और कभी आगे जाते कभी पीछे हठते तथा इसी अवस्था में थे कि सहसा फिसल कर अपनी पीठ के बल गिरे, उन्हें वहशी असवद ने देख लिया। अबू उसामा ने कहा कि उसने उन्हें भाला फेंक कर मारा, वध कर दिया और हज़रत हमज़ा हिजरत-ए-नबवी के बाद बत्तीसवें महीने में ओहद के युद्ध में शहीद हुए, आपकी आयु उस समय उनसठ वर्ष की थी । सीरत इब्ने हिश्शाम में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत हमज़ा के मृत शरीर के निकट खड़े होकर फ़रमाया- ऐ हमज़ा, तेरे इस शोक के जैसा कोई दुःख मुझे नहीं पहुंचेगा, मैंने इससे अधिक शोकनीय दृश्य आजतक नहीं देखा। फिर आपने फ़रमाया- जिब्रईल ने आकर मुझे सूचना दी है कि हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब को सात आसमानों में अल्लाह और उसके रसूल का शेर लिखा गया है।

हज़रत ज़ुबैर बयान करते हैं कि ओहद के युद्ध वाले दिन अन्त में मेरी वालिदा हज़रत सफ़य्या बड़ी तीव्रता के साथ आती दिखाई दी। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसको ठीक नहीं समझा कि कोई महिला वहाँ आए तथा शहीदों के शरीरों को देखे। इस लिए फ़रमाया कि इस महिला को रोको। अतः मैं उनकी ओर दौड़ता हुआ गया, उन्होंने मुझे देख कर मेरे सीने पर हाथ मारकर मुझे पीछे को धकेल दिया और कहने लगीं कि परे हटो, मैं तुम्हारी कोई बात नहीं मानूंगी। मैंने निवेदन किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपको रोकने को कहा है कि आप इन मृतकों को मत देखें। यह सुनते ही वे रुक गईं तथा अपने पास उपलब्ध दो कपड़े निकाल कर फ़रमाया, यह दो कपड़े हैं जो मैं अपने भाई हमज़ा के लिए लाई हूँ क्यूंकि मुझे उनकी शहादत की सूचना मिल चुकी है। तो यह था आज्ञा पालन उस ज़माने का, अर्थात कि यह सुनते ही कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने आदेश दिया है, दुःख की स्थिति के बावजूद तथा इसके बावजूद कि वे बड़े जोश की हालत में थीं, तुरन्त अपनी भावनाओं को नियन्त्रित किया और रुक गईं, जहाँ भी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम का नाम सुना, यह सम्पूर्ण आज्ञा पालन की अवस्था है।

हज़रत हमज़ा को एक ही कपड़े में कफ़न दिया गया था, जब आपका सिर ढाँका जाता तो दोनों पाँव से कपड़ा हट जाता और जब चादर पाँव की ओर खींच दी जाती तो आपके चेहरे से कपड़ा हट जाता तो इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि आपका चेहरा ढाँक दिया जाए तथा पाँव पर अज़ख़र घास रख दी जाए। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने उस दिन हज़रत हमज़ा की जनाज़े की नमाज़ दूसरे शहीदों के साथ सत्तर बार पढ़ाई क्यूंकि हर बार हज़रत हमज़ा का मृत शरीर वहीं पड़ा रहता था। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- ये वे लोग थे जिनसे अल्लाह तआला प्रसन्न हुआ तथा वे अल्लाह तआला से प्रसन्न हुए, जो समृद्धि में अपने भाईयों को याद किया करते थे तथा अपनी पिछली स्थिति को सामने रखते थे, अल्लाह तआला उनके दर्जे बुलन्द से बुलन्द करता चला जाए।

कअब बिन मालिक ने हज़रत हमज़ा की शहादत पर अपने शोक छंद में कहा था कि मेरी आँखें आँसू बहाती हैं तथा हमज़ा के निधन पर इन्हें रोने का पूर्ण रूप से अधिकार भी है किन्तु ख़ुदा के शेर पर रोने धोने तथा चींख़ने पुकारने से क्या मिल सकता है। वह ख़ुदा का शेर हमज़ा कि जिस प्रातः वह शहीद हुआ दुनिया कह उठी कि शहीद तो यह शूर वीर हुआ है। अल्लाह तआला इन सहाबा के दर्जों को बुलन्द से बुलन्द करता चला जाए और उन्होंने अपने बलिदानों के जो उदाहरण स्थापित किए हैं वे रहती दुनिया तक मुसलमान याद रखें तथा उन्होंने नेकियों के जो नमूने स्थापित किए हैं, जो सुन्दर आचरण छोड़े हैं उनके अनुसार कर्म करने की भी हमें तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

Toll Free NO: 180030102131